नव भारत, भोपाल 6 APR 2011

शक्तिशाली नेताओं में अब शिवराज भी

भोपाल,5 अप्रैल नभासं हिन्दी भाषी राज्यों के शक्तिशाली नेतृत्व में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को सबसे पहले शुमार किया गया है. वर्ष 2011 की आलाहस्तियों के बारे में किये गये एक सर्वेक्षण में उन्हें जनता से सीधे संवाद और सहज सरल स्वभाव के बूते अपने राज्य में सच्चा जननेता माना गया है.

सर्वे में चौहान के अलावा तीन और मुख्यमंत्री शामिल किये गये हैं. ये हैं छत्तीसगढ़ के डॉ. रमन सिंह, हरियाणा के भूपिंदर सिंह हुड्डा और उत्तरांखड के रमेश पोखरियाल निशंक.नए भारत की पहचान शीर्षक से किये गये इस आंकलन में कहा गया है कि देश के हिन्दी भाषी राज्यों में नई सोच और विचारों के साथ एक अलग तरह का प्रभावी नेतृत्व उभर रहा है, जो पुरानी पीढ़ी से अलग और आगे है.

शिवराज सिंह चौहान के बारे में इस सर्वेक्षण के जरिये कहा गया है कि उनका जनाधार मजबूत है. अपने करिश्माई व्यक्तित्व के बूते उन्होंने उपचुनावों में कांग्रेस के गढ़ों पर अपनी पार्टी को काबिज किया और नगरीय निकायों के चुनावों में पार्टी की झोली भर दी. उन्होंने राष्ट्रमंडल खेलों के क्वीन्स बैटन को दासता का प्रतीक बनाकर उसके स्वागत से इंकार किया और भी कई सवालों पर उन्होंने अपने बयानों से राष्ट्रीय राजनीति में खलबली मचाई है. यह भी कहा गया है कि चौहान की अनगिनत पदयात्राओं के कारण वे राज्य की ग्रामीण जनता में पांव-पांव वाले भैया के रूप में जाने जाते हैं. अन्त्योदय मेलों से वे लोगों से सीधा-संवाद करते हैं. अब तक विभिन्न योजनाओं के तहत 1500 करोड़ रुपये से ज्यादा की राशि गरीबों और जरूरतमंदों को बांट चुके हैं. कभी जुझारू छात्रनेता रहे शिवराज समय निकालकर अपने बच्चों के स्कूल की पैरेंट्स मीटिंग में जाते हैं और बच्चों की फरमाइश पर रात में उन्हें होटल भी ले जाते हैं. गायत्री परिवार के आचार्य श्रीराम शर्मा के साहित्य को खूब पढ़ने वाले चौहान को खीर और पकोड़े खाना और सफर में पुराने गीत सुनना पसंद है.

राज्यों के रसूखदारों के इस सर्वे में मुख्यमंत्रियों के अलावा नेता, अधिकारी, फिल्मी हस्ती, उद्योगपति और कहीं योग गुरु को प्रभावशाली माना गया है. मध्यप्रदेश से चौहान के अलावा दिग्विजय सिंह व ज्योतिरादित्य सिंधिया को शामिल किया गया है.

शिवराज सिंह

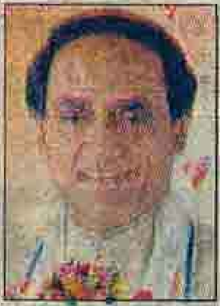
दिग्विजय सिंह

ज्योतिरादित्य सिंधिया